सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

दिनांक 20 अक्टूबर 2017, बल्लबगढ़

! राधा–स्वामी.!

गुरू का ध्यान कर प्यारे, बिना इसके नही छुटना।

हमको छूटना कहाँ से है? छूटना है इस संसार से। छूटने का मतलब ये नही है कि हमको संसार छोड़ देना है। जंगलों पर जाना है, पहाड़ो पर जाना है। नही! ये छूटना नही होता है। अगर तुम जंगलों में जाओगे, और तुम्हारा मन घर में ही अटका रहा, तो क्या छूटा? संसार नही छूटा। अगर संसार छोड़ना है तो घर में रहकर, संसार में रहकर छोडना है। वो होता है छूटना। आप दूध से मक्खन निकालो, क्या फिर वापिस मक्खन दूध में मिल सकता है? नही मिल सकता। इसी तरह अगर आप एक बार संसार से छूट गए तो फिर कभी संसार में वापिस नही जा सकते। एक बार संसार छूट गया तो फिर चाहे आपको कोई लाखो करोड़ो दे दे, फिर भी आप वापिस संसार में नही जाना चाहोगे। ससांर को छोडने का मतलब ये नही है कि आप बंद कमरे में 2–2 घण्टे ध्यान सिमरन करने बैठ जाओ। संसार का हर काम करना है, बच्चों को पढाना है, उनकी शादियाँ करनी हैं, उनके घर बसाने हैं। संसार के सब काम करने हैं, लेकिन एक ड्यूटी समझकर। स्कूल में एक अध्यापक बच्चों को पढाता है, सिखाता है, लेकिन वो उनके साथ चिपकता नही है। बच्चों के साथ मोह नही करता है। बच्चों को साल–साल पढ़ाया, बच्चे पास होकर निकल गए। लेकिन अध्यापक तो नही निकल जाता है उनके साथ। कोई मोह नही है उसे बच्चों के साथ। ऐसे ही संसार को छोडना है। बच्चों को पढ़ाओ, लिखाओ, रिश्तेदारी निभाओ, लेकिन उनके साथ मोह नही करना है। चिपकना नही है। जैसे एक अध्यापक समझता है कि ये किसी और के बच्चे हैं। मेरे बच्चे तो नही है। मेरा काम हे उनको पढ़ाना। ऐसे ही तुमको भी समझना है, ये मेरे बच्चे नही हैं, ये मालिक के बच्चे हैं। मैं इनका संरक्षक हूँ, एक माध्यम हूँ। मुझे डयूटी दी गई हैं, इनको पढाना, लिखाना, इनकी शादी करना, इनके घर बसाना। जब आप ऐसा समझोगे तो ही तुम्हारा संसार छूटेगा। अगर तुम चिपके रहोगे, ये मेरा बेटा है, ये मेरी बेटी है, ये मेरा पति है, ये मेरी पत्नी है, तो संसार नही छूटेगा।

दो चीज हैं एक तरफ मालिक है और दूसरी तरफ संसार है। तुम बीच में हो। अगर तुम संसार की तरफ जा रहे हो, तो मालिक से दूर होते जा रहे हो। अगर तुम मालिक की तरफ जा रहे हो तो संसार छूट जाएगा। कैसे छूटता है संसार? दूध में से मक्खन निकालो, अब वापिस दूध में नही मिलेगा। आप कितनी भी कोशिश करो। तुमको मक्खन बनना है, छाछ संसार हैं। तुमको कोई लाखो करोडो दे दे, तुम नही चाहोगे वापिस संसार में जाना। क्यों? क्योंकि मालिक में आनंद ही आनंद है। उसमें परमसुख है, परम शांति है। क्या तुम फिर कीचड़ में जाना चाहोगे? एक बार तुमको परमआनंद का चस्का लग गया, फिर तुम वापिस कीचड़ में नही जाओगे।

गुरू के दर्शन के बिना, अब नींद तक आती नहीं।
जग की वस्तु कोई भी, मन को मेरे भाती नहीं।।

फिर संसार फीका लगता है। ये कैसे होगा? '' गुरू का ध्यान कर प्यारे'' गुरू से प्रेम करो। गुरू कहता है–

'' सब करनी मैं आप कराऊँ, पहुँचा दूँ धुर दरबारा।
तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।।

यानि ससांर में जो भी कुछ हो रहा है वो गुरू ही कर रहा है। तुम्हारे हाथ में कुछ भी नही है। तुमको मैं तार भी सकता हूँ। लेकिन तुमको भी कुछ करना पड़ेगा। तुमको दो काम करने हैं। तुम अपनी सारी चिंताएँ मुझे दे दो, तुम निश्चिंत हो जाओ। और मुझसे प्रेम करो। हम ससांर के लिए दिन रात आँशु बहाते रहते हैं, कभी गुरू के लिए दो आँशु बहाए हैं? गुरू के लिए कोई आँशु नही

बहा सकता है। गुरू के लिए वही आँशु बहा सकता है, जिसे गुरू से प्रेम हो जाए। गुरू से प्रेम कैसे हो सकता है? गुरू से प्रेम करने का एक ही तरीका है, गुरू का सत्संग सुनो। उसका कोई सत्संग मत छोड़ो। धीरे–2 सतगुरू आपको पकड़ लेगा। पहली बार गुरू का सत्संग आपकी समझ में नही आयेगा। दूसरी बार थोडा सा समझ में आयेगा। फिर धीरे–2 आप समझने लगोगे कि गुरू जी सत्संग में कहते क्या हैं? तो फिर आप गुरू जी से प्रेम करने लगेगें। और जब आपको गुरू जी से प्रेम हो जाएगा, फिर '' गुरू के दर्शन के बिना, अब नींद तक आती नही'' फिर सारा संसार आपको फीका लगने लगेगा। और इस तरह आपका संसार छूट जाएगा।

नाम के रंग में रंग जा, मिले तोहे धाम निज अपना।

नाम के रंग में रंगना क्या होता है? एक होता है नामदान और दूसरा होता है नाम। नामदान होता है गुरू की कक्षा में दाखिला लेना। और नाम हमको खुद गुरू से प्राप्त करना होता है। नाम है राधास्वामी की अवस्था। जब हमारी आत्मा (राधा) परमात्मा (स्वामी) से मिल जाती है, तो उसे बोलते हैं राधास्वामी की अवस्था। और यही है नाम की अवस्था। ये अवस्था कैसे मिलेगी? जब हम गुरू के सत्संग में जायेंगें और उनके वचनों पर अमल करेंगे। गुरू ने आपको दाखिला दे दिया। अब पढ़ाई आपको करनी है। पढाई है भजन–सिमरन। कबीर साहब कहते हैं–

सत्संग लागी रहो रे भाई, तेरी बिगड़ी बात बन जायी।

सत्संग में आया करो, तुम्हारी बिगडी बात बन जायेगी। हमारी बिगडी बात क्या है? हमारी बिगडी बात ये नही है कि हमारे पास घर नही है, मोटर कार नही है, हमारे बेटा बेटी की शादी नही हुई, हमारे पास नौकरी नही है। ये सब भाग्य से मिलता है। हमारी बिगडी बात है कि हम अपने घर से बेघर हो गए हैं। ये संसार हमारा घर नही हैं। एक समय था, जब हम मालिक के अंदर थे। और मालिक ही हमारा घर था। एक राजा महल में बैठा था। वहाँ एक फकीर आया और राजा से पूछने लगा कि ये महल किसका है? तो राज ने कहा जी मेरा है। फकीर ने पूछा आपसे पहले इस महल में कौन रहता था? राजा ने कहा मेरे पिता जी रहते थे। आपके पिता जी से पहले कौन रहता था? मेरे दादा रहते थे। तुम्हारे बाद कौन रहेगा? जी मेरे बच्चे रहेंगें। फिर तुम्हारा महल कहाँ रहा? ये तो एक सराय है, एक आता है, एक जाता है। इसी तरह संसार का हरेक घर एक सराय है। सतगुरू जीवों के भले के लिए आता है। एक सच्चे सतगुरू को किसी भी चीज का कोई लालच नही होता। बल्कि लालच आपको होना चाहिए सतगुरू से। मैं अधिक से अधिक गुरू जी का सत्संग सुनू और दर्शन करूँ। एक बार तुमको सतगुरू के दर्शन की तड़प लग गई, फिर तो तुम्हारा संसार अपने आप ही छूट जाएगा। इसी को बोलते हैं– '' गुरू का ध्यान कर प्यारे, बिना इसके नही छुटना''

राधास्वामी!